

## इलाहाबाद विकास प्राधिकरण

(५)

पत्रांक 44 / प्र030-भवन / जोन-1 / शनिवार / 2013-14 दिनांक 15/06/2013

### विविधमितीकरण

यह विवेदमितीकरण ३०४० नंबर नियोजन तथा विवर अधिनियम १४८३ ली धारा ३२ के सन्तुष्टि द्वारा इस भूमि के सामग्री में जिस उप इमान मानविक संस्कृत किया जा रहा है उपरोक्त इसी अधिकारी विविध या इच्छा यानीक अधिकारी द्वारा जारी के लिए आदेकारों पर विवरों का छोड़ अपर पट्टेगा उपरोक्त यह अनुग्रह विवरों के विविधता द्वारा दर्शाया गया रखायित के अधिकारों के विवरों के विवरों के अधिकारी द्वारा दर्शाया गया।

श्री जय केशवानी पुत्र श्री लक्ष्म ताता द्वारा उपरोक्त श्री होमर उपभेदाजित भूखण्ड संख्या-६३/१ सिविल स्टेशन, इलाहाबाद नंबर ८ ज्या (१) के उन्नामत वाइल नामिन्द्र का विवेदमितीकरण विभागित प्रिवेट के लिए प्रदर्शन की गई है:-

१. उपरोक्त नाम विवेद एवं वेतन अधिनियम १९७३ ली धारा १५ (१) के प्रावेदनों द्वारा अनुलेप पूर्णता प्रमाण पर प्राप्त कर्त्ता के वकालत है उपभेदाजित अधिकारी द्वारा जारी भूमि नियोग एवं विवार तथानि २००५ में उन्नामत संख्या-२.१.३ एवं ३१.८ ने विविध प्रावेदन एवं लागू गया वर्तमान आवश्यक है।
२. इह स्वीकृति अनुमिति (Provisional) रद्दीकृते के रूप में होती है जिसमें दूर्दृष्टि विवरण, रानी शावशक Mancatory Clearances/N.O.C के बारे में उपरोक्त स्थान के विवरण, विवरण जाने वाले 'पूर्ण प्राप्त' प्राप्त करने के बाद ही इस प्रावेदन को वास्तविक रूपान्वय में लाया जा सकता।
३. उपरोक्त रूपरेखा का एल बोर्ड रागलर स्वीकृति सम्बन्धी विवर अधिकारी द्वारा है-
४. उपरोक्त रूपरेखा द्वारा द्वारा दिया गया वर्तमान अधिकारी द्वारा दर्शने का विविध अवैदित का है।
५. उपरोक्त अधिवेदन/उपभेद ग्रूपलॉग प्रावेदन/गोनियोगीलॉग नामांकन से अनुसार है कर्त्ता है।
६. विवर दर्शन समय पर दिनांक ०८.६.२०१३ के उपरांत नामिन्द्र में दावित अनुमिति भाग को स्वीकृत शन मानविक प्राप्त होने के १५ दिनों से ३०८६ स्थल उपर उपरांत प्रावेदन का चार्जित करना होगा। अन्यथा इसे प्रावेदकरा द्वारा अवैदित करते हुए इस पर होने वाला व्यव शू-राजस्त के बकाये की ओर वर्तुल विवर जारी की जाएगा।
७. उपरोक्त गाम के उपरांत उपरांत दिया गया कारंग कृशन इंजीनियर जी देव रेख में लगता है। उपरोक्त दुष्प्रियता विवर द्वारा किया गया उपरोक्त कारंग की दावी न होने वाली है।
८. मानवीय व्यवालय में ऐडी वाय द्वारा दिया गया वायव उपरांत होने की देखते हैं प्रदूष लीकार्टि मानवीय व्यवालय के विविध के अधीन होती है। लाभित सम्बन्धी विवरों में विवरण पर वायविक रूप साझा जाता है।
९. यदि अवेदक द्वारा काइ महाल्युण सुधना कियार्ही रही है तो उपरांत ग्रावर शून्यन की रही है तो उपरोक्त गाम नियोजन इस विवास अधिनियम १९७३ ली धारा १५ (१) के उपरांत वायविक विवरण दर्शाया जाता है।
१०. यदि नियोजन रो यादे ताता के सहज की पृष्ठी अथवा उड़ान या नारी के किनी भाग (जी एकान के अन्य पार्ट अथवा एक अन्य उपरांत अलाइ उपरांत लागू हो गई हो) का जानी पृष्ठी तो वृद्धत्वानी द्वितीय हो जाने पर १५ दिन के भीतर अथवा यदि विवास प्रावेदकरा ने एक विवरण सूचना द्वारा अर्द्ध शंका कहते हों तो यही है उपरोक्त रूपरेखा में सम्मान नामांकन पूर्ण असत्य विवरण से अनुग्रह हो जाये।
११. यह नियोजन द्वारा दिया गया रूपरेखा द्वारा दिया गया वायव नामांकन अधिनियम १९८६ इंजीनियरों सेटी एवं १९८८ विवास ८२ का उल्लंघन कियी रही दर्शा दी जाना चाहिए। यदि विवास अधिनियम ली जानवारी में ऐडी वाय द्वारा दिया गया विवरण के रोक अथवा दृश्यता दर्शाया जाता है।
१२. यदि स्वरूपणों का उपरांत विवास अधिकारी वायव रूपरेखा द्वारा दिया गया विवास अधिनियम १९८३ की उपरांत वाय जारी के अन्याय व्यवालयों की जायेगी।
१३. आवेदक द्वारा दिया गया उपरांत विवास प्रावेदकरा को उपरांत जानी जाने हुए उपरांत वायव द्वारा दिया गया उपरांत आवाद होने से पूर्व जेना होना दर्शन तथा उपरांत आवादी जो उपरांत जिराले विवास में विवरण में विवरण में विवरण होता है।
१४. यदि नियोजन द्वारा दिया गया विवरण अनविलूप्त घोषित कर उपर अधिनियम की धारा २७ (१) के अन्तर्गत लाभवाही दारमान की जायेगी।

(गुरुकृष्ण शासी)  
रामपुरा वायव / प्र030-भवन  
झानालाय विवास प्राधिकरण,  
झानालाय द.

fayyaz  
16/6/13

